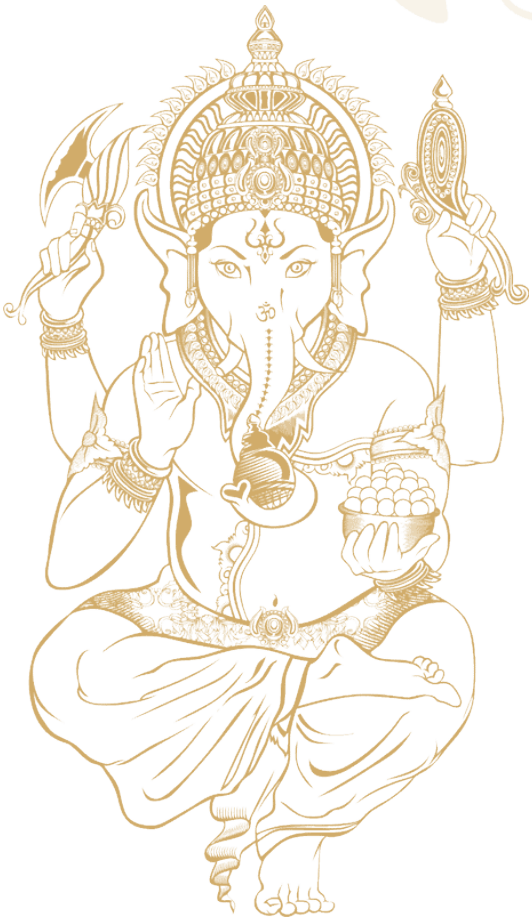

Ms.Anmol Agrawal

11 Apr 1994

10:50 AM

Raipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119206301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**11/04/1994**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**10:50:00 घंटे**
इष्ट	12:34:25 घटी
स्थान	**Raipur**
राज्य	Chhattisgarh
देश	India

अक्षांश	21:16:00 उत्तर
रेखांश	81:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:03:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	10:46:48 घंटे
वेलान्तर	-00:01:09 घंटे
साम्पातिक काल	00:03:36 घंटे
सूर्योदय	05:48:13 घंटे
सूर्यास्त	18:20:51 घंटे
दिनमान	12:32:38 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	27:18:57 मीन
लग्न के अंश	15:49:37 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**रेवती - 4**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	वैधृति
करण	किंस्तुघ्न
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ची-चित्रलता
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1916	चैत्र	21
पंजाबी	संवत : 2050	चैत्र	29
बंगाली	सन् : 1400	चैत्र	28
तमिल	संवत : 2050	पंगुनी	28
केरल	कोल्लम : 1169	मीनम	28
नेपाली	संवत : 2050	चैत्र	29
चैत्रादि	संवत : 2051	चैत्र	शुक्ल 1
कार्तिकादि	संवत : 2051	चैत्र	शुक्ल 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 08:23:12
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 11:39:07 घंटे
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय कालीन योग ____: वैधृति
योग समाप्ति काल _____: 16:37:25 घंटे
जन्म योग _____: वैधृति
सूर्योदय कालीन करण ____: किंस्तुघ्न
करण समाप्ति काल _____: 19:04:23 घंटे
जन्म करण _____: किंस्तुघ्न
भयात _____: 65:26:46
भभोग _____: 67:29:33
भोग्य दशा काल _____: बुध 0 वर्ष 6 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

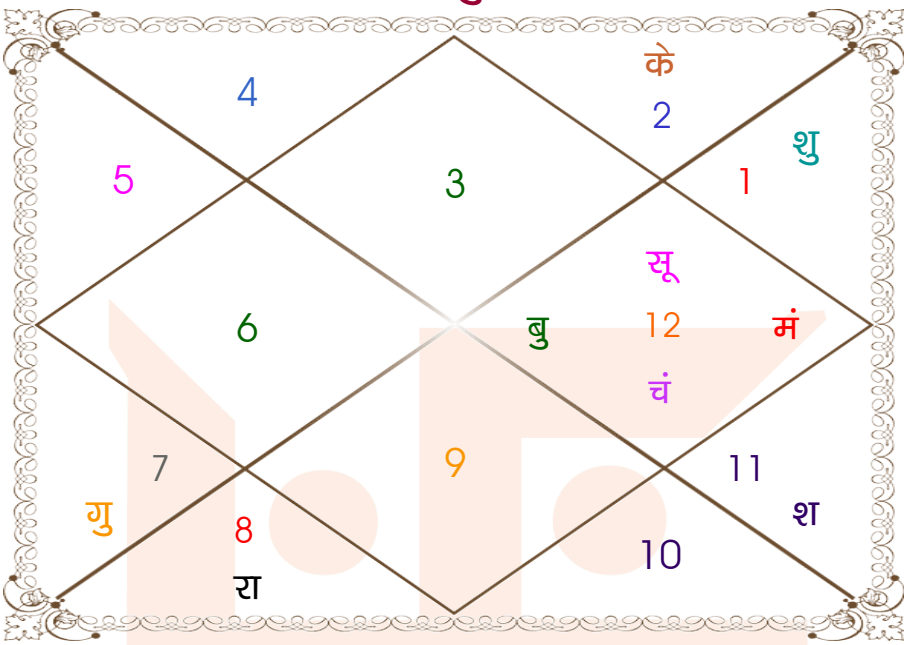

चन्द्र कुंडली

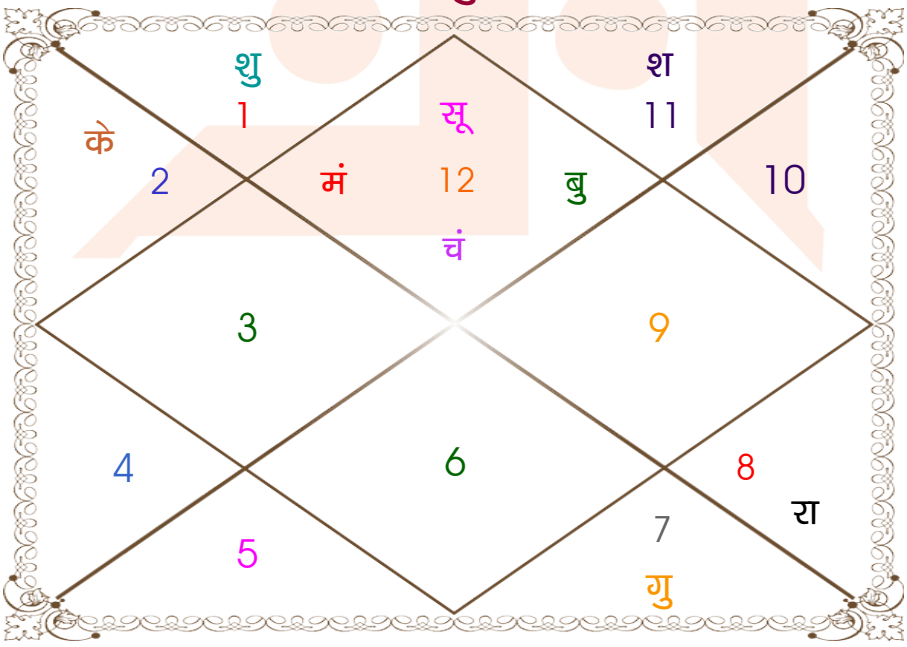

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

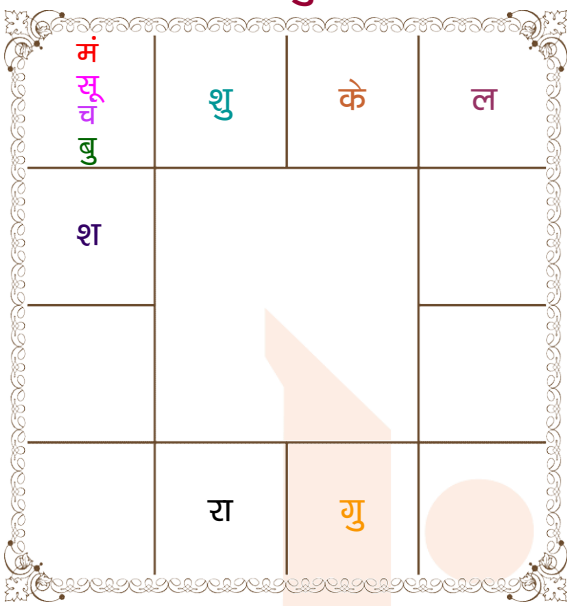

लग्न कुंडली

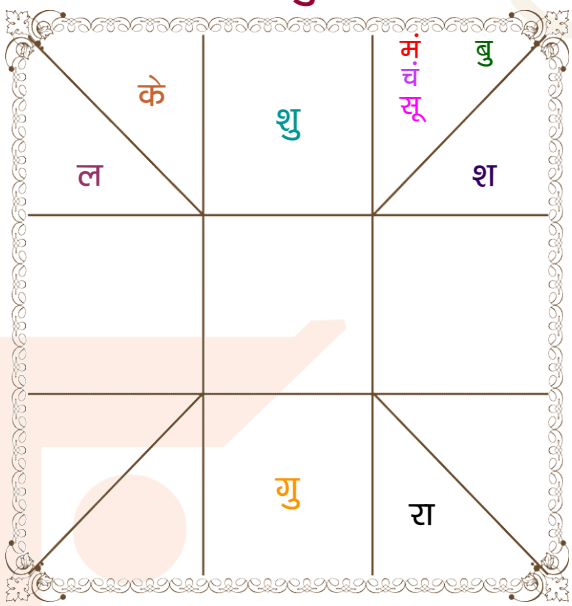

विंशोत्तरी
बुध 0वर्ष 6मा 5दि

बुध

11/04/1994

15/10/2097

बुध	16/10/1994
केतु	15/10/2001
शुक्र	15/10/2021
सूर्य	16/10/2027
चन्द्र	15/10/2037
मंगल	15/10/2044
राहु	16/10/2062
गुरु	16/10/2078
शनि	15/10/2097

योगिनी
उल्का 0वर्ष 2मा 5दि

उल्का

16/06/2024

16/06/2030

उल्का	16/06/2025
सिद्धा	16/08/2026
संकटा	16/12/2027
मंगला	15/02/2028
पिंगला	16/06/2028
धान्या	15/12/2028
भ्रामरी	16/08/2029
भद्रिका	16/06/2030

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	15:49:37	322:48:15	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	---
सूर्य			मीन	27:18:57	00:58:54	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			मीन	29:35:49	11:49:16	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	सम राशि
मंगल			मीन	03:28:22	00:46:45	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	मित्र राशि
बुध			मीन	08:47:42	01:41:52	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	नीच राशि
गुरु	व		तुला	18:20:35	00:06:41	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र			मेष	17:48:37	01:13:42	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	मंगल	सम राशि
शनि			कुंभ	14:36:37	00:06:00	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मूलत्रिकोण
राहु	व		वृश्चि	00:14:45	00:04:11	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	00:14:45	00:04:11	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	सम राशि
हर्ष			मक	02:24:03	00:00:59	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
नेप			धनु	29:30:49	00:00:28	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	राहु	---
प्लूटो	व		वृश्चि	03:50:28	00:01:14	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
दशम भाव			मीन	07:12:01	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:51

लग्न-चलित

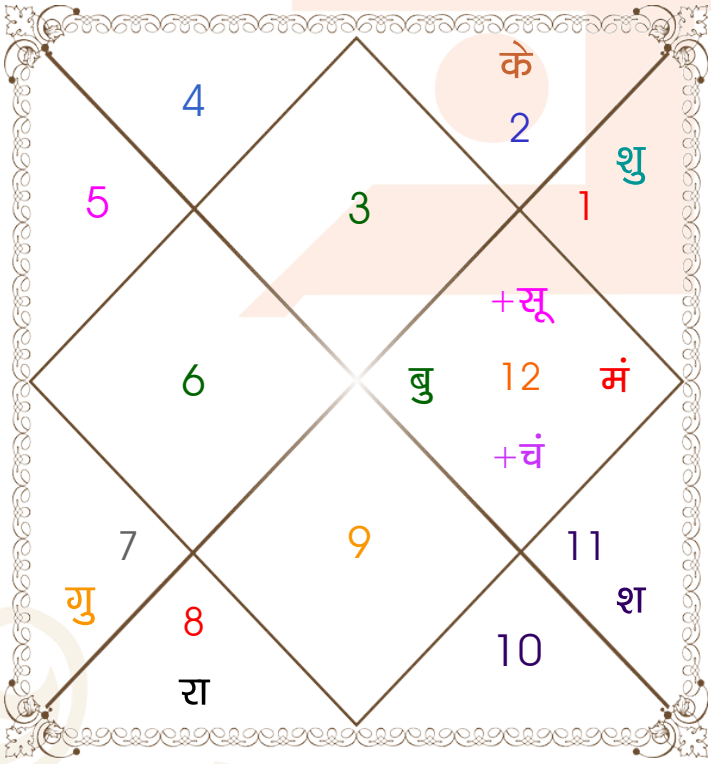

चन्द्र कुंडली

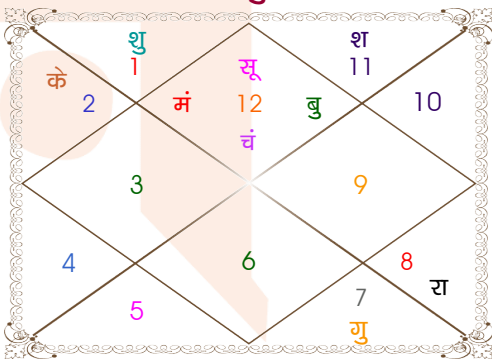

नवमांश कुंडली

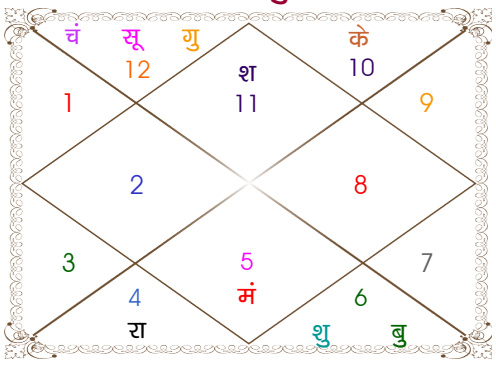

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	29:23:21	मिथुन	15:49:37
2	मिथुन	29:23:21	कर्क	12:57:05
3	कर्क	26:30:49	सिंह	10:04:33
4	सिंह	23:38:17	कन्या	07:12:01
5	कन्या	23:38:17	तुला	10:04:33
6	तुला	26:30:49	वृश्चिक	12:57:05
7	वृश्चिक	29:23:21	धनु	15:49:37
8	धनु	29:23:21	मकर	12:57:05
9	मकर	26:30:49	कुम्भ	10:04:33
10	कुम्भ	23:38:17	मीन	07:12:01
11	मीन	23:38:17	मेष	10:04:33
12	मेष	26:30:49	वृष	12:57:05

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	15:49:37
2	कर्क	10:01:31
3	सिंह	06:32:20
4	कन्या	07:12:01
5	तुला	11:08:27
6	वृश्चिक	14:48:06
7	धनु	15:49:37
8	मकर	10:01:31
9	कुम्भ	06:32:20
10	मीन	07:12:01
11	मेष	11:08:27
12	वृष	14:48:06

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

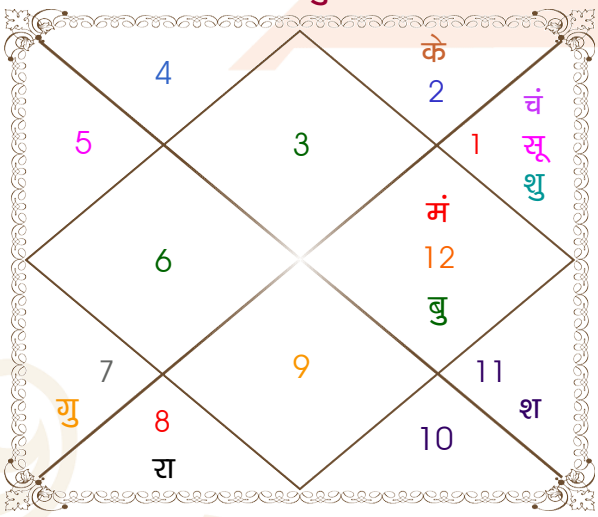

भाव कुंडली

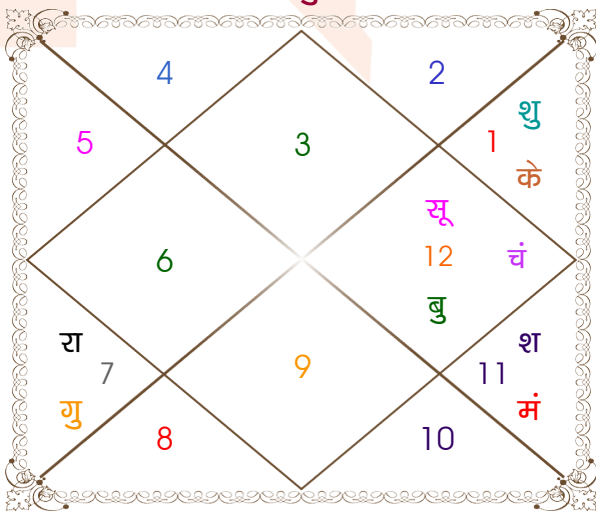

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 0 वर्ष 6 मास 5 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
11/04/1994		16/10/1994		15/10/2001		15/10/2021		16/10/2027	
16/10/1994		15/10/2001		15/10/2021		16/10/2027		15/10/2037	
	00/00/0000	केतु	14/03/1995	शुक्र	14/02/2005	सूर्य	02/02/2022	चंद्र	15/08/2028
	00/00/0000	शुक्र	13/05/1996	सूर्य	14/02/2006	चंद्र	04/08/2022	मंगल	16/03/2029
	00/00/0000	सूर्य	18/09/1996	चंद्र	16/10/2007	मंगल	10/12/2022	राहु	15/09/2030
	00/00/0000	चंद्र	19/04/1997	मंगल	15/12/2008	राहु	03/11/2023	गुरु	15/01/2032
	00/00/0000	मंगल	15/09/1997	राहु	16/12/2011	गुरु	21/08/2024	शनि	16/08/2033
	00/00/0000	राहु	04/10/1998	गुरु	16/08/2014	शनि	03/08/2025	बुध	15/01/2035
	00/00/0000	गुरु	09/09/1999	शनि	15/10/2017	बुध	10/06/2026	केतु	16/08/2035
	11/04/1994	शनि	18/10/2000	बुध	15/08/2020	केतु	16/10/2026	शुक्र	16/04/2037
शनि	16/10/1994	बुध	15/10/2001	केतु	15/10/2021	शुक्र	16/10/2027	सूर्य	15/10/2037

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
15/10/2037		15/10/2044		16/10/2062		16/10/2078		15/10/2097	
15/10/2044		16/10/2062		16/10/2078		15/10/2097		12/04/2114	
मंगल	14/03/2038	राहु	28/06/2047	गुरु	03/12/2064	शनि	19/10/2081	बुध	14/03/2100
राहु	01/04/2039	गुरु	21/11/2049	शनि	16/06/2067	बुध	28/06/2084	केतु	11/03/2101
गुरु	07/03/2040	शनि	27/09/2052	बुध	21/09/2069	केतु	06/08/2085	शुक्र	10/01/2104
शनि	16/04/2041	बुध	16/04/2055	केतु	28/08/2070	शुक्र	06/10/2088	सूर्य	16/11/2104
बुध	13/04/2042	केतु	04/05/2056	शुक्र	28/04/2073	सूर्य	18/09/2089	चंद्र	17/04/2106
केतु	09/09/2042	शुक्र	05/05/2059	सूर्य	14/02/2074	चंद्र	19/04/2091	मंगल	14/04/2107
शुक्र	09/11/2043	सूर्य	28/03/2060	चंद्र	16/06/2075	मंगल	28/05/2092	राहु	01/11/2109
सूर्य	16/03/2044	चंद्र	27/09/2061	मंगल	22/05/2076	राहु	04/04/2095	गुरु	07/02/2112
चंद्र	15/10/2044	मंगल	16/10/2062	राहु	16/10/2078	गुरु	15/10/2097	शनि	12/04/2114

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 0 वर्ष 6 मा 6 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
03/08/2025		10/06/2026		16/10/2026		16/10/2027		15/08/2028	
10/06/2026		16/10/2026		16/10/2027		15/08/2028		16/03/2029	
बुध	16/09/2025	केतु	17/06/2026	शुक्र	16/12/2026	चंद्र	10/11/2027	मंगल	28/08/2028
केतु	05/10/2025	शुक्र	09/07/2026	सूर्य	03/01/2027	मंगल	28/11/2027	राहु	29/09/2028
शुक्र	25/11/2025	सूर्य	15/07/2026	चंद्र	02/02/2027	राहु	13/01/2028	गुरु	27/10/2028
सूर्य	11/12/2025	चंद्र	26/07/2026	मंगल	24/02/2027	गुरु	22/02/2028	शनि	30/11/2028
चंद्र	06/01/2026	मंगल	02/08/2026	राहु	19/04/2027	शनि	11/04/2028	बुध	30/12/2028
मंगल	24/01/2026	राहु	21/08/2026	गुरु	07/06/2027	बुध	24/05/2028	केतु	11/01/2029
राहु	11/03/2026	गुरु	07/09/2026	शनि	04/08/2027	केतु	10/06/2028	शुक्र	16/02/2029
गुरु	22/04/2026	शनि	28/09/2026	बुध	25/09/2027	शुक्र	31/07/2028	सूर्य	27/02/2029
शनि	10/06/2026	बुध	16/10/2026	केतु	16/10/2027	सूर्य	15/08/2028	चंद्र	16/03/2029

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
16/03/2029		15/09/2030		15/01/2032		16/08/2033		15/01/2035	
15/09/2030		15/01/2032		16/08/2033		15/01/2035		16/08/2035	
राहु	07/06/2029	गुरु	19/11/2030	शनि	16/04/2032	बुध	28/10/2033	केतु	27/01/2035
गुरु	19/08/2029	शनि	04/02/2031	बुध	07/07/2032	केतु	27/11/2033	शुक्र	04/03/2035
शनि	13/11/2029	बुध	14/04/2031	केतु	10/08/2032	शुक्र	21/02/2034	सूर्य	15/03/2035
बुध	30/01/2030	केतु	13/05/2031	शुक्र	14/11/2032	सूर्य	19/03/2034	चंद्र	01/04/2035
केतु	03/03/2030	शुक्र	02/08/2031	सूर्य	13/12/2032	चंद्र	01/05/2034	मंगल	14/04/2035
शुक्र	02/06/2030	सूर्य	26/08/2031	चंद्र	30/01/2033	मंगल	31/05/2034	राहु	16/05/2035
सूर्य	30/06/2030	चंद्र	06/10/2031	मंगल	05/03/2033	राहु	17/08/2034	गुरु	13/06/2035
चंद्र	14/08/2030	मंगल	03/11/2031	राहु	30/05/2033	गुरु	25/10/2034	शनि	17/07/2035
मंगल	15/09/2030	राहु	15/01/2032	गुरु	16/08/2033	शनि	15/01/2035	बुध	16/08/2035

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
16/08/2035		16/04/2037		15/10/2037		14/03/2038		01/04/2039	
16/04/2037		15/10/2037		14/03/2038		01/04/2039		07/03/2040	
शुक्र	26/11/2035	सूर्य	25/04/2037	मंगल	24/10/2037	राहु	10/05/2038	गुरु	17/05/2039
सूर्य	26/12/2035	चंद्र	10/05/2037	राहु	16/11/2037	गुरु	30/06/2038	शनि	10/07/2039
चंद्र	15/02/2036	मंगल	21/05/2037	गुरु	05/12/2037	शनि	30/08/2038	बुध	27/08/2039
मंगल	21/03/2036	राहु	17/06/2037	शनि	29/12/2037	बुध	23/10/2038	केतु	16/09/2039
राहु	21/06/2036	गुरु	12/07/2037	बुध	19/01/2038	केतु	15/11/2038	शुक्र	12/11/2039
गुरु	10/09/2036	शनि	10/08/2037	केतु	28/01/2038	शुक्र	18/01/2039	सूर्य	29/11/2039
शनि	15/12/2036	बुध	04/09/2037	शुक्र	22/02/2038	सूर्य	06/02/2039	चंद्र	27/12/2039
बुध	11/03/2037	केतु	15/09/2037	सूर्य	01/03/2038	चंद्र	10/03/2039	मंगल	16/01/2040
केतु	16/04/2037	शुक्र	15/10/2037	चंद्र	14/03/2038	मंगल	01/04/2039	राहु	07/03/2040

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	97%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
नीलम	शनि	78%	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
हीरा	शुक्र	70%	धनार्जन, कम खर्च, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	67%	व्यावसायिक उन्नति, धन
माणिक्य	सूर्य	66%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पुखराज	गुरु	64%	सन्तति सुख, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	44%	व्यय, हानि
गोमेद	राहु	41%	शत्रु व रोग, व्यावसायिक हानि
मूंगा	मंगल	31%	व्यावसायिक हानि, हानि, शत्रु व रोग

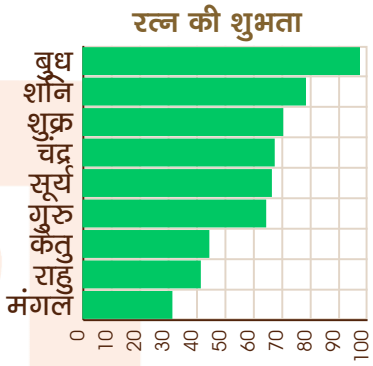

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	16/10/1994	72%	55%	31%	100%	64%	77%	78%	41%	44%
केतु	15/10/2001	53%	55%	44%	97%	64%	77%	66%	16%	59%
शुक्र	15/10/2021	53%	55%	31%	100%	64%	83%	85%	52%	53%
सूर्य	16/10/2027	78%	73%	44%	97%	70%	58%	66%	16%	19%
चंद्र	15/10/2037	72%	80%	31%	100%	64%	70%	78%	16%	19%
मंगल	15/10/2044	72%	73%	53%	84%	70%	70%	78%	16%	53%
राहु	16/10/2062	53%	55%	6%	97%	64%	77%	85%	58%	19%
गुरु	16/10/2078	72%	73%	44%	84%	77%	58%	78%	41%	44%
शनि	15/10/2097	53%	55%	6%	100%	64%	77%	91%	52%	19%

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/1994-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	अल्प बचत
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ स्थित है, यद्यपि चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु मानसिक रूप से आप यदा कदा परेशानी की अनुभूति करेंगी। स्वभाव में उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में अनावश्यक विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व भी असफल हो सकती हैं। इससे आपके पति का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे परेशान हो सकते हैं।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा साथ ही लग्न से चतुर्थ में दृष्टि के कारण आपको जीवन में भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति परिश्रम पूर्वक होगी। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाविक तेजी या क्रोध का भाव उनमें विद्यमान रहेगा जिससे यदा कदा संबंधों में मधुरता की न्यूनता रहेगी। साथ ही अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा उनकी सिद्धि में विलम्ब होगा परन्तु स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

अतः मंगल के अशुभ प्रभावों को कम करने तथा दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इस दोष के भंग होने पर आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा जीवन में आवश्यक भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही इनका उपभोग भी करेंगी। चल एवं अचल सम्पति की भी आपको प्राप्ति होगी। पति के साथ भी संबंधों में मधुरता रहेगी। जीवन में आप धन ऐश्वर्य सौभाग्य एवं शुभ प्रभावों से युक्त

होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

कुंडली मिलान के समय जिस युवक की कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ हो यदि आवश्यक न हो तो ऐसे विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल की स्थिति से दोनों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल दोष भंग कर देगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उचित मिलान करके अंतिम निर्णय लेना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय -समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(15/10/2021 - 16/10/2027)

सूर्य की महादशा 15/10/2021 को आरंभ और 16/10/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य दशम भाव में अवस्थित है। सूर्य शक्ति, प्रभुत्व, या, ख्याति, और राजकीय अनुग्रह का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दशम भाव व्यवसाय, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, प्राप्ति और कार्य के स्वभाव का सूचक है। अतः इस दशा में आपको व्यवसाय में लाभ तथा प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा जीवन की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्भुत शक्ति है और आप किसी भी बीमारी से जल्द ही छुटकारा प्राप्त कर लेंगे।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी। आप स्वभाव से उदार व दानी हैं, इसलिये यदि आप पर्याप्त धन चाहते हैं तो अपने व्यय पर नियंत्राण रखें। आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप पिता के कारोबार में शामिल हो सकते हैं और नौकरी तथा वाणिज्य-व्यापार से धन अर्जित कर सकते हैं। आपको सरकारी व्यवसाय से लाभ प्राप्त हो सकता है और कठिन परिश्रम से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों या अन्य सरकारी एजेंसियों के प्रधान होंगे। आपको शक्तिशाली व आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। इस दशा-काल में आपको नियत आमदनी के साथ-साथ एक सुरक्षित कार्य मिलेगा। आप सैन्य, राजनीतिक, प्रशसकीय, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाओं में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। रत्न, पत्थर, संगमरमर, सोना, कोयला, अनाज आदि का व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोग इस दशा के दौरान बहुत अच्छा करेंगे और उनकी पदोन्नति होगी। उच्चाधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति और आमदनी में वृद्धि होगी। व्यवसायियों -व्यापारियों को यश और ख्याति तथा विरोधियों पर विजय की प्राप्ति होगी।

परिवार :

आप इस दशा में अपने बच्चों को प्यार देंगे और उनका ध्यान रखेंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे। आप अपने परिवार तथा जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रखेंगे। आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी और आपका सामाजिक जीवन उत्तम होगा। अपना विचार दूसरों पर न थोंपे। आपके जीवन साथी की आमदनी अच्छी होगी और उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता को सुख प्राप्त होगा और साझेदारी में लाभ प्राप्त होंगे। आपके पिता भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी। आपके भाई-बहनों की

अवांछित यात्राएँ और व्यय होंगे। उन्हें सुख-सुविधाएँ और लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

आप अपने अध्ययन में बहुत अच्छा करेंगे और हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करेंगे। आपकी शारीरिक विज्ञान तथा कला में रूचि रहेगी।

PT.AMITABH SHARMA
SHREEDEO PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(21/08/2024 - 03/08/2025)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 21/08/2024 को प्रारंभ होगी और 03/08/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको किसी लंबी यात्रा से लाभ हो सकता है। संतान और छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी। लेखन से धन आ सकता है। यात्रा, उपहार, दान में धन व्यय हो सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी। मातहतों एवं सहकर्मियों का सहयोग मिलता रहेगा।

जीवनसाथी को परिश्रम करना होगा। पिता का समय भाग्यशाली और समृद्ध रहेगा। उनके आपके साथ संबंध मधुर रहेंगे। माता का समय सामान्यतः उत्तम रहेगा; उन्हें मामूली स्वास्थ्य-समस्या हो सकती है। भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे। आपकी संतान सुखी होगी और आपको सुख देगी।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ होगा, मित्र बनेंगे, उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यर्थ की यात्राएं होंगी। व्यापारियों के लिए कुछ परिवर्तन का योग है।

स्नायुतंत्र, पैरों की व्याधि या गठिया से बचाव करें। अरिष्ट से बचने के लिए भैरव के रूप में शिवजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(03/08/2025 - 10/06/2026)

आपकी सूर्य की महादशा 15/10/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 03/08/2025 को प्रारंभ होकर 10/06/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको कार्यों में सफलता मिलेगी, धन प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। आपका मन अध्यात्म में लगेगा। व्यापार, वाक्पटुता, विज्ञान आपके लिए लाभप्रद रहेंगे। आपका कार्य सफल रहेगा और उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता से सुख और संभवतः धन प्राप्त होगा।

आपके मामापक्ष के लोग सौभाग्यशाली होंगे। आपको जीवनसाथी के परिवार से धनलाभ हो सकता है। आपके साझेदार को निवेश से लाभ, सफलता और धन प्राप्त होंगे। आपके पिता भाषण करेंगे और विचार विमर्श में भाग लेंगे।

माता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे, वे आपकी सहायता करेंगी। भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है या शोधकार्य कर सकते हैं। उनको अचानक धन मिल सकता है, यात्राएं होंगी और व्यय बढ़ेंगे।

आपकी संतान को लाभकारी कार्यों में अपनी शक्ति को केंद्रित करना चाहिए। अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे और अधिकारियों से सहयोग प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों के लिए समय खूब धन कमाने का है।

हाथ-पांव की समस्याओं, स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचने के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(10/06/2026 - 16/10/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 15/10/2021 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/06/2026 को आरंभ होकर 16/10/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में यात्रा, निवास में परिवर्तन आदि की संभावना है। आपकी अध्यात्म और गूढ़ विद्या में रुचि हो सकती है। शत्रु सिर उठा सकते हैं। परंतु अंततः आप विजयी रहेंगे। भलाई के कार्य करेंगे। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। हिम्मत, उत्साह और स्वास्थ्य उत्तम रहेंगे। पालतू जानवरों से खुशी मिलेगी। मामापक्ष के लोग सहायता करेंगे।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी; वाहन सुख रहेगा। माता भाग्यशाली रहेंगी, उनकी यात्राएं होंगी, अध्यात्म में रुचि रहेगी। भाई-बहनों की कार्यस्थल पर व्यस्तता बढ़ेगी, धन का लाभ होगा। आपकी संतान अपने क्रियाकलापों में कुछ परिवर्तन की इच्छुक होगी। अगर वे नौकरी में हैं तो अप्रत्याशित धन का लाभ होगा, परिवर्तन होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा, वांछित कार्य पूरे होंगे, लाभ और सम्मान प्राप्त होंगे। व्यापारियों को धनलाभ होगा। परामर्शदाताओं की यात्रा होगी, सहकर्मियों से सहायता प्राप्त होगी।

बायें कान या पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। नेत्रों की देखभाल जरुरी है। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की आराधना करें और श्वान को भोजन दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(16/10/2026 - 16/10/2027)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप सफल होंगे। आपकी सभी आकांक्षाओं और इच्छाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म भी हो सकता है। स्त्रियों से संबंधित कार्य बहुत लाभकारी रहेगा। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। कला में रुचि होगी। अपनी किस्मत का

महादशा :- चन्द्र
(16/10/2027 - 15/10/2037)

चन्द्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 16/10/2027 को आरंभ और 15/10/2037 को समाप्त होगी।

चन्द्र दशम भाव में अवस्थित है। दशम भाव प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सम्मान, शक्ति तथा इज्जत, सफलता तथा साख, आदर तथा ख्याति, उत्तरदायित्व, पदोन्नति, नियुक्ति, उच्च पद, शासन से सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आपके लिए शुभ होगी और आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपको सुखमय तथा उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। इस अवधि में किसी बड़े रोग या चोट की संभावना नहीं है और आप बिना किसी बाधा के स्वस्थ जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र वाहन का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में आप अपनी सम्पत्तियों और आर्थिक स्थिति का विस्तार करने में सफल होंगे। आपकी चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आपके बैंक-बैलेंस में भी वृद्धि होगी और इस तरह आप समृद्धिशाली होंगे।

व्यवसाय :

चंद्र दशम अर्थात् अपने ही भाव में अवस्थित है और दशम भाव व्यवसाय और जीवन-वृत्ति का प्रतीक है। इसलिए आप अपने व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आपको मिलेंगे और आप प्रगति करेंगे। यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके मस्तिष्क में नये व्यवसायों के अनेक विचार उभरेंगे। व्यवसाय में आपकी साख तथा स्थिति में वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन तथा सहकर्मी आपके विचारों की सराहना करेंगे और आप व्यवसाय में अगुआ होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप का पारिवारिक जीवन सुखमय होगा क्योंकि आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपके जीवन साथी आप की व्यावसायिक वृत्ति में भी सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अपनी शिक्षा में बहुत तरक्की करेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(16/10/2027 - 15/08/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 16/10/2027 को प्रारंभ होकर 15/10/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 16/10/2027 को प्रारंभ होकर 15/08/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। इस अवधि में आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। धनकोष में वृद्धि होगी; उच्चपद और लोकप्रियता की प्राप्ति का योग है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के मंत्र के 11000 जाप करें और शाम के समय चंद्र मंत्र उच्चारित करते हुए चंद्रमा को दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(15/08/2028 - 16/03/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 16/10/2027 को प्रारंभ होकर 15/10/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 15/08/2028 को प्रारंभ होकर 16/03/2029 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित होकर 1, 4 और 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप खूब धन कमाएंगे और धनवान बन जाएंगे। आपका दबदबा अच्छा रहेगा और प्रबंधन में सख्त कदम उठाएंगे।

आप दक्ष कारीगर बन सकते हैं, अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप स्वयं उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। संतान की संख्या कम हो सकती है या संतानरहित हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रातःकाल हनुमान जी की पूजा कर 6 रत्ती का मूंगा सोने की अंगूठी में, कच्चे दूध से धोकर, दायें हाथ की कनिष्ठिका में हनुमान चालीसा 108 बार पढ़ कर धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(16/03/2029 - 15/09/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 16/10/2027 को प्रारंभ हुई और 15/10/2037 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 16/03/2029 को प्रारंभ होकर 15/09/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। राहु छाया ग्रह है जो

अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अंतर्दशा के दौरान शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं। मानसिक और शारीरिक रुप से बीमार हो सकते हैं। प्रत्येक कदम संभल कर रखें, क्योंकि किसी कांड में फंस सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें और 7 (रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।